XIX/160

स्वर्गीय पंडित कृष्ण कान्त जी मालवीय

[लेखक:- श्री. विद्यार्थी]

केन्द्रीय लेजिस्लेटिव असेम्बली के और हिन्दू प्रसिद्ध हिन्दू विद्वान सदस्य श्री कृष्ण कान्त मालवीय का ता० ३ जनवरी की रात को लगभग ६ बजे इरविन अस्पताल देहली में देहान्त हो गया। अखबार में यह समाचार देखा और देखकर थोड़ा चौकना पड़ा। किसी परिचित या साथी के एकाएक बिछुड़ने जैसी ठेस दिल पर लगी। वैसे वे पिछले अक्टूबर मास से अपनी बीमारी के कारण बहुत ही परेशान थे।

उनके राजनैतिक जीवन से पिछले वर्षों में जो कई हेर फेर हुए, उनके विषय में मैं स्वयं कुछ अधिक नहीं जानता। उनको खोकर आज हिन्दी जगत ने एक सुन्दर पत्रकार, वद्वान लेखक, तरुण समाज ने एक मस्त दिल दोस्त, केन्द्रीय असेम्बली के सदस्यों ने एक जिन्दा दिल साथी और मालवीय परिवार ने अपनी एक परमप्रिय कुटुम्बी तथा बन्धुजन खो दिया है। महामना मालवीय जी का भी अपना 'कृष्ण' खो गया है। पूज्य मालवीय जी के वह भतीजे थे।

× × × ×

मैने उन्हें एक बार काफी नजदीक से देखा था। उनके बड़प्पन की अवस्था में भी एक तरुण के यौवन और उत्साह की झांकी मिलती थी। उनके नेत्रों में एक तेज चमकता था। उनके दिल की उमंगे हरी ही लहराती थी, ऐसा लगता था कि वह कभी बड़े से बड़े सवाल के सामने आने पर भी अपनी प्रकृति को नीरस न होने देते होंगे। उनकी जीवन में शुष्कता नहीं, सदा हरियाली ही दिखाई देती थी। वे परिस्थियों और लोगों के दिलों की बात समझने वाले एक सफल द्रष्टा मालूम होते थे, यही उनके जीवन की शायद सब से बड़ी सफलता थी। एक सफल लेखक, पत्रकार, देशसेवक तथा हिन्दुस्तानी कहलाने में आज उनका वही गुण सबसे ज्यादा काम देगा।

× × × ×

दिल्ली की बात है। उस साल मैं पहली बार दिल्ली गया था। मेरे लिये वह जगह आश्चर्यजनक थी, क्योंकि घर से बाहर भी तब तक मैं ज्यादा नहीं निकला था। मैं दिल्ली पहुंचा, उसके

राष्ट्रीय अभिलेखागार भारत National Archives of India

दूसरे दिन घर पर यह समाचार मिला कि उस दिन दोपहर को दीवान हाल देहली में एक विराट् कवि सम्मेलन का आयोजन वहां के हिन्दी प्रेमियों की ओर से किया गया है और साथ ही सम्मेलन के संयोजक ने हिन्दी के प्रसिद्ध २ कवियों और कवित्रियों के आने के लिये आमन्त्रित किया है। ऐसे सुन्दर प्रस्ताव के प्रति मेरा लोभ हो जाना स्वाभाविक ही था। कवियों की वाणी का रसास्वादन करने के लिये मैं भी घर से दिवान हाल की ओर चल दिया। संयोग से उस दिन के जल्से के सभापति श्री पं० कृष्ण कान्त मालवीय थे। शायद ऐसेम्बिली की भी कोई बैठक उस दिन होगी, क्योंकि वे वहां काफी देर में आ पाये थे।

दैनिक 'हिन्दुस्तान' के संपादक श्री सत्यदेव विद्यालंकार और 'वीर अर्जुन' के सम्पादक श्री राम गोपाल जी के अतिरिक्त मंच पर चारों ओर बैठे हुये सभी लोग मेरे लिए अपरिचित थे और मैं भी उनके लिए अपरिचित था। इसीलिये उस विद्वत मंडली में बैठकर भी मेरी दृष्टि अधिकतर सभापति जी की ही ओर थी। उनकी 'सुहागरात' पुस्तक को मैं तीन चार साल पहले एक बार देख चुका था। उस समय वह अपने विषय की एक सुन्दर चीज मालूम देती थी। स्त्री साहित्यपर वैसे भी हिन्दी में पुस्तकों का आज तक बड़ा अभाव बना हुआ है और जो थोड़ा बहुत पुस्तकें है भी तो, उनमें बेढंगी पुस्तकों की अधिक भरमार है। बाद में तो उनकी एकदो पुस्तके और देखी। इनका मैंने यह परिणाम निकाला कि उन्होंने जो कुछ भी लिखा वह काफी अध्ययन और विषय को पूरी तरह समझ कर ही लिखा। उस दिन के कवि सम्मेलन का कार्यक्रम बिलकुल असफल सा रहा। जनता ने भी कम गड़बड़ी नहीं की। श्री मालवीय जी ने बेकाबू जनता को काफी सम्हाला लेकिन उस दिन के जल्से में कुछ आनन्द नही आया। सबसे बड़ा लाभ जो मिला, वह तो यहीथा कि हिन्दी साहित्य के मुझ सरीखे एक सेवक ने पंडित कृष्ण कान्त मालवीय को काफी नजदीक से देखा और सुना। लेकिन इसी जगह तो पंडित कृष्ण कान्त मालवीय के पास एक साहित्यिक मंच पर घंटे डेढ घन्टे साथ रहने की बात याद हो आई है। यह याद तो फिर भी जब कभी उस सम्मेलन का जिक्र होगा, आयेगी ही।

x x x x

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

राष्ट्रीय अभिलेखागार भारत National Archives of India

बड़ा दुख है कि विक्रम सं० १६४० आते उन्हें हमारे बीच लाया और ईस्वी सन् १६४० जाते जाते उन्हें हमारे बीच से उठा ले गया । इस तरह उनकी अवस्था लगभग ५७ साल की थी । सन् १६२० के राष्ट्रीय आन्दोलन में भी जेल गये और अब जब सन् ४० में आन्दोलन छिड़ा तो उनके जेल जाने की तैयारी किसी दूसरी ही जगह ले गई । ऐसी जगह जहां व्यर्थ का कोलाहल नहीं होता । `मर्यादा` द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय विषयों पर हिन्दी में लिखे जाने का उन्होंने काफी प्रोत्साहन दिया । पिछले वर्षों में भारत में दैनिक शिक्षा की जरूरत पर उन्होंने बड़ा ध्यान दिया । उनके सुपुत्र पं० पद्म कान्त मालवीय हिन्दी के एक प्रसिद्ध कवि है । वे स्वयं भी एक शायर और उर्दू कविताओं के प्रेमी थे । मौजूदा पीढ़ी के वे एक बुजुर्ग होते हुये भी एक जवान हम साथी की तरह थे । एक हम उम्र दोस्त की तरह थे उनके व्यवहार में प्रदर्शन या दिखावा नहीं था । बनावट और कृत्रिमता को वे नापसन्द करते थे । पूज्य मालवीय को वे जब कभी पत्र लिखते, सदा `बाबू` शब्द से सम्बोधन कर `आपका कृष्ण` लिख कर समाप्त कर देते । अपनों के लिये विशेषण आदि की क्या जरूरत है, सम्मान ही काफी है,ऐसा वे मानते थे ।

ऐसे ही सादे व्यवहार कुशल मिलनसार और जिन्दा दिल के थे । आज वे नहीं रहे, फिर भी उनकी स्मृतियां हमारे साथ है ।

प्रभु दिवंगत आत्मा को शान्ति तथा `मालवीय परिवार` और समस्त परिचित जनों को धैर्य प्रदान करे ।

`साप्ताहिक वीर अर्जुन`

....

स्वर्गीय पं० कृष्ण कान्त मालवीय

पंडित कृष्ण कान्त जी मालवीय की मृत्यु से हिन्दी पत्रकार जगत् को भारी क्षति हुई है । उनके निधन से हिन्दी का एक सच्चा लेखक चला गया । हिन्दी माता अपने इस देशभक्त पुत्र को खोकर मर्माहत हो रही है । शोकाकुल मालवीय परिवार को हम क्या कह कर सान्त्वना दे और क्या कह कर हम समझायें । श्री पद्म कान्त मालवीय को, जो इस समय०८८

राष्ट्रीय अभिलेखागार भारत National Archives of India

अपने राजनीतिक विचारों के कारण जेल में है । श्री पद्म कान्त मालवीय अपने सुयोग्य पिता के योग्य उत्तराधिकारी है और हम यह आशा करते है कि वे इसे विधि विधान समझ कर धैर्य धारण करेंगे और अपने पिता के पद चिन्हो का अनुसरण करेंगे । पं० कृष्ण कान्त जी मालवीय के मर जाने पर भी अमर है । हिन्दी भाषा की प्रगति और देश के स्वराज्य सम्बन्धी प्रयत्नो का जो इतिहास लिखा जायगा, उसमें उनकी सेवाओं का उल्लेख गौरव के साथ किया जायगा ।

पंडित कृष्ण कान्त जी मालवीय का जन्म १८८१ ईस्वी में हुआ था, १९०८ ईस्वी में प्रयाग विश्व विद्यालय से वे ग्रेजुएट हुए । इसी समय के आसपास प्रयाग से माननीय पंडित मदन मोहन जी मालवीय ने सहयोगी 'अभ्युदय' निकाला, उसके सम्पादक पं० कृष्ण कान्त जी मालवीय हुए और अन्त तक रहे । १९१० में उन्होने हिन्दी साहित्य को नवयुग की स्फूर्ति प्रदान करने के लिए मासिक पत्रिका 'मर्यादा' को जन्म दिया और उसका सम्पादन भी कई साल तक किया । १९१६ में कांग्रेस और मुस्लिम लीग में समझौता हो जाने के बाद देश में एक नवीन जागृति हो गयी । उस समय पं० कृष्ण कान्त जी मालवीय जनता को राजनीतिक शिक्षा देने के लिए अपने यहां से कितनी ही पुस्तके हिन्दी में प्रकाशित की और सराहनीय कार्य किया ।

पंडित कृष्ण कान्त जी मालवीय स्वतन्त्र विचार के पत्रकार थे । वे अपने व्यक्तिगत विवेक को उचित महत्व देते थे और किसी के अंध ~~विश्वास~~ समर्थक नहीं थे । यह होने पर भी उन्होने देश की पुकार की उपेक्षा कभी नहीं की और कांग्रेस के असहयोग आन्दोलन के सिलसिले में तीन बार जेल गये और सब तरह के कष्टों का स्वागत किया । इस बार भी जब सत्याग्रह प्रारम्भ हुआ, बीमार रहते हुए भी वे सत्याग्रह करने के लिए बड़े उत्सुक हो रहे थे । वे अपनी धुन के पक्के थे और कोई प्रलोभन और कोई भी भय उन्हें सेवा के निश्चित पथ से विचलित नहीं कर सकता था । पंडित कृष्ण कान्त जी मालवीय सब से पहले १९२३ में जब कांग्रेस ने कौन्सिल प्रवेश की नीति को स्वीकार कर लिया था, केन्द्रीय एसेम्बली में गये थे । १९३० और १९३६ में पुनः एसेम्बली में निर्वाचित किये गये । १९२६ में वे एसेम्बली की स्वतन्त्र कांग्रेस पार्टी के जेनरल सेक्रेटरी थे । १९२८ से १९३१ तक उन्होने अखिल भारतीय सम्मेलन के प्रधान मंत्री का कार्यभार वहन किया था । हिन्दी में उन्होने 'सुहागरात', 'मनोरमा के पत्र', 'मातृत्व' आदि कितनी ही किताबें

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA
राष्ट्रीय अभिलेखागार भारत National Archives of India

की रचना की है।

पंडित कृष्ण कान्त जी मालवीय बहुत ही मिलनसार और हंसमुख थे। उनकी शैली जोरदार और भाषा मंजी हुई होती थी। अन्तर्राष्ट्रीय विषयों से उन्हें विशेष अनुराग था और जिन्दा दिल भी खूब थे। वे अच्छी कविता भी करते थे और १९२०-२१ में जब वे आगरा डिस्ट्रिक्ट जेल में असहयोग आन्दोलन के सिलसिले में अपनी सजा काट रहे थे, मुशायरों और कवि सम्मेलनों में अपनी रचनाओं से उन्होंने अच्छी प्रतिभा का परिचय दिया था।

३ जनवरी १९४८ की रात में दिल्ली के इरविन अस्पताल में कई महीने की बीमारी के बाद जब उनकी मृत्यु हुई उनकी एक लालसा अधूरी ही रह गयी। वर्तमान महासमर से कई साल पहले से ही वे एक महान् कार्य में लगे हुए थे। समय का तकाजा और देश की आवश्यकता अनुभव कर उन्होंने अखिल भारतीय ग्लाइडिंग इन्स्टीटयूट की स्थापना की थी, जिसके वे स्वयं ही सेक्रेट्री भी थे। इस संस्था के द्वारा वे १९४२ के अन्त के देश के २५००० युवकों को आकाश में उड़ने की शिक्षा देने का उद्योग कर रहे थे। अन्य देश में ग्लाइडरों द्वारा युवकों में खेल ही खेल ~~में~~ में आकाश विहार की मनोवृत्ति जग जाती है। पंडित कृष्ण कान्त जी मालवीय का भी जीवन के अंतिम दिनों में यही दूरदर्शितापूर्ण प्रयत्न था। उनकी यह इच्छा उनके साथ ही चली गयी। देशवासियों ने उनके निधन के बाद भी यदि यह कार्य पूरा किया, तो निश्चित ही परलोक में उनकी आत्मा को सन्तोष होगा और इससे देश का बड़ा लाभ होगा।

'मासिक विश्वमित्र'

...

~~स्व०~~ स्वर्गीय कृष्ण कान्त जी मालवीय

पंडित कृष्ण कान्त मालवीय की मृत्यु में हिन्दी साहित्य ने एक जोरदार लेखक और प्राचीन पत्रकार तथा युक्त प्रांत ने एक प्रसिद्ध और देश भक्त नागरिक खोया है। जबरदस्त लेखक के रूप में उन्होंने न केवल योग्यता पूर्वक 'अभ्युदय' का सम्पादन ही किया बल्कि उन्होंने बहुत सी पुस्तकें लिखीं और यह सब करते हुए भी उन्होंने सार्वजनिक कामों

राष्ट्रीय अभिलेखागार भारत National Archives of India

में भाग लेने का भी समय निकाला । असहयोग और सत्याग्रह आन्दोलनों में वे लड़ाई के बिलकुल बीचों बीच में थे और तीन बार जेल गये । यदि वे अर्से से बीमार न होते तो शायद इस समय चौथी बार जेल काटते होते । तीन बार वह केन्द्रीय व्यवस्थापिका सभा के सदस्य चुने गये और अपनी मृत्यु के अन्त समय तक उसके सदस्य रहे । स्वाभाविकतया मिलनसार पंडित कृष्ण कान्त प्रत्येक जाति और दल के लोगों में प्रभावशाली थे । मृत्यु के समय उनकी अवस्था ५८ वर्ष की थी । हम प्रसिद्ध मालवीय परिवार के इस दु:ख में उनसे समवेदना प्रकट करते है । यह क्षति मालवीय परिवार की ही नहीं बल्कि समस्त देश की है ।

'हिन्दुस्तान टाइम्स दिल्ली'

.....

पंडित कृष्ण कान्त मालवीय की मृत्यु से देश को भारी क्षति पहुँची है । हृदय के अन्तस्तल से वे देश भक्त थे और देश की उन्नति के लिये कार्य करने वाली शक्तियों को सुदृढ करने में उन्होंने अपनी ~~सबल~~ शक्ति का कण कण लगा दिया । भाग्य मालवीय परिवार के सेवा और त्याग की ऊँची परम्परा को उन्होंने बड़े ऊंचे रूप में कायम रक्खा । वर्षों तक उन्होंने बिना किसी हिचकिचाहट के कांग्रेस की नीति और उसके कार्यक्रम को माना और उसको पूरा करने में संशय या थकावट अपने में नहीं आने दिया । वे जेल गये और प्रसन्नता पूर्वक अन्य यातनाओं को सहते रहे । जब वह कांग्रेस से अलग हुये तो इसलिये नहीं की वह कांग्रेस द्वारा नियत त्याग के मार्ग पर चलते चलते थक गये थे वरन् इसलिये क्योंकि मुख्य प्रश्नों पर उनका उससे मतभेद था किन्तु कांग्रेस से उनके मतभेद ने उन्हें केन्द्रीय व्यवस्थापिका सभा में, कहां कि वे कांग्रेस राष्ट्रीय दल की ओर से चुने गये थे, सरकार के साथ मोर्चा लेने में कांग्रेस का साथ देने से कभी नहीं रोका । पंडित कृष्ण कान्त मालवीय केवल 'आगे बढ़ने वाले' नेता नहीं थे । वे एक जबर्दस्त पत्रकार भी थे । उनकी लेखनी अग्निमय थी । उनका अपना एक पत्र था जिसके द्वारा वह अपने देशवासियों को शिक्षित और उत्साहित किया करते थे । वे दूरदर्शी व्यक्ति थे । वह देख सकते थे कि कोई भी राष्ट्र

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA
राष्ट्रीय अभिलेखागार भारत National Archives of India

जो पूर्णरूप से वायु पर अधिकार नहीं रखता और जिसके पास अच्छा हवाई बेड़ा नहीं है भावी जीवन मरण के युद्ध अपने अस्तित्त्व को कायम नहीं रख सकता। अपने जीवन के अन्तिम दिनो में अपने देशवासियों में हवाई शिक्षा की आवश्यकता तथा तत्सम्बन्धी विचारों को फैलाने तथा उन्हे कार्य रूप में परिणित करने में उन्होने अपना सारा समय लगाया। आज उनका स्वर्गवास हो गया। और भारतीयों को आकाश में ऊंचे उड़ते हुये देखने का उनका स्वप्न पूरा नहीं हो पाया। यह उन लोगो का, जो उनकी स्मृति को जीवित रखना चाहते है, और जिन्हें भारत से उतना ही प्रेम है जितना उन्हें था। कर्तव्य है कि वह उनके उक्त स्वप्न का चरितार्थ करने के लिये कोई बात उठा न रक्खे।

ट्रिब्यून 'लाहौर'

....

युक्त प्रान्त को दु:ख

समाचार पत्रो ने हमें पिछले महीने पंडित कृष्ण कान्त मालवीय की मृत्यु का दुखपूर्ण समाचार दिया। कृष्णा भाई का निधन तो हमारी व्यक्तिगत हानि है। मृत्यु शइया पर पड़े पड़े भी वे 'विश्ववाणी' की प्रगति की खबर पूछते रहते थे। कृष्णा भाई में मतभेदो से उठकर आपस का प्रेम सम्बन्ध कायम रखने की जबर्दस्त क्षमता थी। वे अपनी स्नेहपूर्ण याद हर एक के दिल में छोड़ गये है।

परमात्मा इनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करें।

'विश्ववाणी'

......